संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : ३१ ● २६ अगस्त २०१७ भादपद शुक्ल पक्ष अष्टमी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

गुरूकुल शिक्षा मानव निर्माण की वैज्ञानिक पद्धति है

– श्री चौ० लक्ष्मी नारायण जी
संस्कृति मन्त्री, उ०प्र०, सरकार

गढ़मुक्तेश्वर– २० अगस्त– गुरूकुल शिक्षा मानव निर्माण की एक वैज्ञानिक पद्धति है ये विचार चौ० लक्ष्मी नारायण सिंह जी संस्कृति मन्त्री उ०प्र० सरकार लखनऊ ने व्यक्त किये। गंगा किनारे पूठ (पुष्पापवती धाम) निकट गुढ़मुक्तेश्वर, जि०– हापुड़ के स्थापना दिवस एवं वेदारम्भ संस्कार महोत्सव के समापन सत्र पर मुख्य अतिथि मा० मन्त्री जी ने बताया कि गुरूकुल पूठ में मेरा कई वर्षों से आने का मन था पर प्रभु की कृपा नहीं हो पाई थी। आज पुराने तीर्थ एवं ऐतिहासिक धरोहर को देखकर मन अति प्रसन्न हुआ है साथ ही भीष्म पितामह द्वारा ४ हजार साल पुराने गुरूकुल को गुरू द्रोणाचार्य की वसीयत को पूज्य स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने सुरक्षित करने का जो भगीरथ प्रयास किया है उ०प्र० सरकार स्वामी जी के प्रति कृतज्ञ रहेगी और इसे पर्यटक स्वरूप प्रदान करने के लिए योजना बनायेगी कि हरिद्वज्ञर की तर्ज पर गढ़ एवं ब्रजघाट के विकास के साथ ही इसे भी जोड़ने का पूरा प्रयास किया जायेगा जनता ने इसका करतल ध्वनि से स्वागत किया। आपने बताया कि मेरा गुरूकुल परम्परा से पुराना परिचय है मेरे पूज्य पिता जी ने मुझे आदेशित किया कि अपने बच्चें गुरूकुल में पढ़ाने हैं उनकी आज्ञानुसार मेरी बेटियाँ कन्या गुरूकुल हाथरस में पढ़ी हैं मैं गुरूकुल जाता रहता हूँ आज भी मेरा गुरूकुलों के प्रति इसीलिए आत्मीय भाव हैं। वैज्ञानिक पद्वति से मानव निर्माण की कला से समाज निर्माण करके राष्ट्र निर्माण करते हैं गुरूकुल परम्परा में गुरू शिष्य का जो पवित्र सम्बन्ध है वह माता, मन, चित्त, वाणी का दान करके उसमें एकाकार होकर अपना सारा ज्ञान उसमें विलीन करने का संकल्प लेता है यह पवित्रता संसार में अन्यत्र कहीं भी देखने को नहीं मिलती केवल हमारी भारतीय संस्कृति की ही विशेषता है। भारत इसीलिए विश्व का गुरू रहा है इसमें त्यागवृत्ति हैं इदं न मम'' का भाव हमें यज्ञ से मिलता है यज्ञ की संस्कृति देवताओं की संस्कृति है ''सामवेद पारायण यज्ञ'' की पूर्णाहुति करने का मुझे सौभाग्य मिला है। मैं समझता हूँ मेरे किसी जन्म का पुण्य उदय हो गया है मुझे यहाँ आकर प्राचीन काल के आश्रमों की स्मृतियाँ याद आ रही हैं यहाँ गुरूद्रोणाचार्य के इस गुरूकुल में जब धर्मराज युधिष्ठर एवं भीम महाबली– तथा धनुर्धर अर्जुन, नकुल, सहदेव पढ़ते थे जब यहाँ एकलव्य भी उन्हें देखकर यहीं जंगल में अपनी गुरू साधना में तपस्या कर रहा था उस का इतिहास भी सदैव प्रेरणा प्रद रहेगा। लेकिन गुरूद्रोण अब किसी का अंगूठा नहीं ले सकेगें अब उन्हें प्रत्येक सुख– सुविधा से युक्त करके सच्चा

शेष पृष्ठ – ७ पर

सामवेद स्वस्ति यज्ञ

सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी एवं सभा कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द आर्य के शीघ्र अच्छे स्वास्थ्य के लिए गुरूकुल पूठ के स्थापना दिवस पर सामवेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ करते हुए सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने अपने संकल्प मन्त्र में परमात्मा से प्रार्थना की कि हे प्रभो! हमारे अधिकारी– सभा प्रधान जी एवं सभा कोषाध्यक्ष जी शीघ्र उत्तम आरोग्य संवर्धनाय सुख–समृद्धि संवर्धनाय च आत्म– समाज कल्याणय सामवेद पारायण यज्ञ कर्म करिष्ये।

आर्य जनता एवं आर्य मित्र परिवार भी आपके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता है।

शुभकामनाओं सहित !

गुरूकुल परिवार, सम्पादक मण्डल,
आर्य मित्र परिवार, कर्मचारीगण,
आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ५ मीराबाई मार्ग,
लखनऊ।

डॉ. धीरज सिंह
कार्यवाहक प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

गुरूमीत सिंह : राम रहीम सच्चा सौदा, धन-धन सतगुरू की विनाश लीला

आज पूरे विश्व में जिस गुरू को विभिन्न रूपों में लोग चमत्कारी बाबा मानते थे वे कितने कलुषित निकले ये सारी दुनियां ने टी०वी० समाचार चैनल पर देख लिया। शान्ति के उपदेशक, प्रचारक जब अपने शिष्यों को आग लगाने का षड्यन्त्र रचते हैं अपना प्रभाव दिखाने को सड़क जाम एवं तोड़–फोड़ कराते हैं तथा सरकारी सम्पत्ति के अलावा गरीबों की रोटी रोजी जैसी रिक्शा, रेहड़ी को सामान सहित जला देते हैं यह कहाँ कि मानवता है अथवा कौन सा शान्ति धर्म है? इस विनाश लीला का ताण्डव पूरे देश में भय का वातावरण बना रहा है। रेलवे–स्टेशनों पर आगजनी से आम नागरिक त्रस्त है। ६६० रेलगाड़ियों के रद्द होने से कितने लोगों का आवागमन बाधित हुआ कितने आवश्यक कार्य निरस्त हो गए कितने निरपराध लोग मारे गए इस का दोषी कौन है? सच्चा सौदा यही है कि झूठ को सत्य सिद्ध करने के लिए क्या ये उपाय सार्थक रहेंगे? सत्याचरण–सच्चरित्रता, सत्यधर्म, सच्चा सौदा, तो केवल सच्चिदानन्द रूप परम पिता परमपिता परमात्मा की वाणी वेद में ही है अन्यत्र तो ''सत्यस्यापिहितं मुखम्'' हिरण्यमयेन पात्रेण'' सत्य धर्माय दृष्टये पैसे रूपी चमक से सत्य को दबाया जा रहा है लेकिन यह ज्यादा दिन नहीं रहता श्री प्रकाश चन्द्रजी आर्य कविरत्न लिखते हैं–

सत्य धर्म का प्रचार कभी रुक न सकेगा।
बादल में अधिक देर सूर्य छिप न सकेगा।।

यथार्थ यही है कि वैदिक परम्परा से विपरीत चलने वालों का चरित्र एक दिन लोगों के सामने आयेगा। वे चाहें सन्त आशाराम हों चाहे रामपाल दास हों अथवा रामरहीम हों– गुरूमीत सिंह से नाम बदल कर लोगों को भ्रमित किया गया। सच्चा सौदा, झूठा निकला और गुरूजी धन – धन्य न होकर धन–धान्य से युक्त हो गए उसका ही आसरा लिया था लेकिन मार्ग से स्वयं ही भटक गए और चरित्र शिक्षा देते हुए स्वयं फिसल गए। दोषी पाये जाने पर अपने शिष्यों द्वारा दोषमुक्त कराने के प्रयास में शिष्य भी दोषी बन गए। अन्धपरम्परा इसी का नाम है कभी गुरूगोविन्द सिंह बनना चाहता है तो कभी एक्टर बनकर प्रभावी बनने की इच्छा है बाजीगर की तरह रूप दिखाने से चमत्कार अन्धभक्तों के लिए तो प्रभावशाली है। लेकिन इस वैज्ञानिक युग में यदि आदि काल से सच्चा धर्म कोई सिद्ध हो सका है वह वैदिक धर्म ही है और रहेगा क्योंकि यह किसी व्यक्ति विशेष पर आधारित नहीं है यह शाश्वत वेदानुकूल है जिसे कहा गया है– ''न ममार न जीर्यति परमदेवस्यकाव्यम्'' इस प्रभु के काव्य (वेद) को देखो–सुनो–पढ़ों जो कभी न पुराना होता है न कभी समाप्त होता है हमेशा नवीन रहता है, पन्थ, मजहब, सम्प्रदाय सब पुराने होते रहते हैं। यह सदैव प्रासांगिक रहकर हमारा मार्ग दर्शन करता है। महर्षि दयानन्द जी की दया, कृपा से हमें पुनः प्राप्त हुआ है अतः आर्यों आओ इस वेदमार्ग को अपनाओ। अन्यथा सभी सौदे झूठे हैं सत्य की चादर कैसे समाज में सुख–शान्ति, विश्वास पैदा करेगी उसे तो अपमानित होकर जेल में ही उपयुक्त स्थान है। जो भी दृश्य आम लोगों ने देखे के आम जनता अभी गहरे अन्धकार में है उसे वहाँ से निकलने का प्रयास आर्य–समाज के विद्वान्–सन्यासी–उपदेशक, कार्यकर्त्ता अधिकारियों को करना चाहिये। महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसा उज्ज्वल चरित्र जो सदैव वेदानुकूल जीवन से सभी का उपकार करते रहे। जो अज्ञान, अन्धकार में भटक रहे थे उन्हें सन्मार्ग दिखाकर सच्चा मार्ग दिखाया। ये सच्चा सौदा नामधारी मात्र जनता को भ्रमित कर स्वयं स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं इनके काले कारनामे जनता के समाने आ रहे हैं फिर भी अन्धभक्त धन–धन सतगुरू कहकर उन्हें अपना आराध्य देव स्वीकार रहे हैं। हे प्रभो इन्हें सद्बुद्धि प्रदान करो। सामाजिक संगठन एवं सरकार को भी सद्बुद्धि दो जो भटकते हुए इन भक्तों को सच्चा मार्ग (वेदमार्ग) मिल सके और सच्चा सौदा जिसे समझ रहे है उस (झूठे सौदे) से बचकर अपना जीवन– परिवार– समाज और राष्ट्र को अज्ञान अन्धकार से बचाकर वेदज्ञान के सूर्य प्रकाश में सच्चे प्रभु के दर्शन लाभावित्त हो सकें। हे प्रभो! इन्हें ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करो।

''नान्यपन्थाः विद्यतेऽयनाय'' - सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्थ समुल्लासारम्भः

अथ समावर्त्तनविवाहगृहाश्रमविधिं वक्ष्यामः

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याऽशूद्रो अजायत।।

यह यजुर्वेद के ३१वें अध्याय का ११वां मन्त्र है। इसका अर्थ है कि ब्राह्मण ईश्वर के मुख, क्षत्रिय बाहू, वैश्य ऊरू और शूद्र पगों से उत्पन्न हुआ है। इसलिये जैसे मुख न बाहू आदि और बाहू आदि न मुख होते हैं, इसी प्रकार ब्राह्मण न क्षत्रिययादि और क्षत्रियादि न ब्राह्मण हो सकते हैं।

उत्तर– इस मन्त्र का अर्थ जो तुम ने किया वह ठीक नहीं क्योंकि यहाँ पुरुष अर्थात् निराकर व्यापक परमात्मा की अनुवृत्ति है। जब वह निराकार है तो उसके मुखादि अंग नहीं हो सकते, जो मुखादि अंग वाला हो वह पुरुष अर्थात् व्यापक नहीं और जो व्यापक नहीं वह सर्वशक्तिमान जगत् का स्रष्टा, धर्त्ता, प्रलयकर्त्ता जीवों के पुण्य पापों की व्यवस्था करने हारा, सर्वज्ञ, अजन्मा, मृत्युरहित आदि विशेषणवाला नहीं हो सकता।

इसलिये इस का यह अर्थ है कि जो (अस्य) पूर्ण व्यापक परमात्मा की सृष्टि में मुख के सदृश सब में मुख्य उत्तम हो वह (ब्राह्मणः) ब्राह्मण (बाहू) **'बाहुर्वै बलं बाहुर्वै वीर्यम्'** शतपथब्राह्मण। बल वीर्य का नाम बाहू है वह जिस में अधिक हो सो (राजन्यः) क्षत्रिय (ऊरू) कटि के अधो और जानु के उपरिस्थ भाग का नाम है जो सब पदार्थों और सब देशों में ऊरू के बल से जावे आवे प्रवेश करे वह (वैश्यः) वैश्य और (पद्भ्याम्) जो पग के अर्थात् नीच अंग के सदृश मूर्खत्वादि गुणवाला हो वह शूद्र है। अन्यत्र शतपथ ब्राह्मणादि में भी इस मन्त्र का ऐसा ही अर्थ किया है। जैसे–

'यस्मादेते मुख्यास्तस्मान्मुखतो ह्यसृज्यन्त।' इत्यादि

जिस से ये मुख्य हैं इस से मुख से उत्पन्न हुए ऐसा कथन संगत होता है। अर्थात् जैसा मुख सब अंगों में श्रेष्ठ है वैसे पूर्ण विद्या और उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव से युक्त होने से मनुष्यजाति में उत्तम ब्राह्मण कहाता है। जब परमेश्वर के निराकर होने से मुखादि अंग ही नहीं है तो मुख आदि से उत्पन्न होना असम्भव है। जैसा कि वन्ध्या स्त्री आदि के पुत्र का विवाह होना! और जो मुखादि अंगों से ब्राह्मणादि उत्पन्न होते तो उपादान कारण के सदृश ब्राह्मदि की आकृति अवश्य होती। जैसे मुख का आकार गोल मोल है वैसे ही उन के शरीर का भी गोलमोल मुखकृति के समान होना चाहिये। क्षत्रियों के शरीर भुजा के सदृश, वैश्यों के ऊरू के तुल्य और शूद्रों के शरीर पग के समान आकार वाले होने चाहिये। ऐसा नहीं होता और जो कोई तुम से प्रश्न करेगा कि जो जो मुखादि से उत्पन्न हुए थे उन की ब्राह्मणादि संज्ञा हो परन्तु तुम्हारी नहीं, क्योंकि जैसे और सब लोग गर्भाशय से उत्पन्न होते हैं वैसे तुम भी होते हो। तुम मुखादि से उत्पन्न न होकर ब्राह्मणादि संज्ञा का अभिमान करते हु इसलिये तुम्हारा कहा अर्थ व्यर्थ है और जो हमने अर्थ किया है वह सच्चा है। ऐसा ही अन्यत्र भी कहा है। जैसा–

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शुद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च।। मनु० ।।

जो शूद्रकुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समान गुण, कर्म, स्वभाव वाला हो तो वह शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाय, वैसे ही ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यकुल में उत्पन्न हुआ हो और उस के गुण, कर्म, स्वभाव शूद्र के सदृश हों तो वह शूद्र हो जाय। वैसे क्षत्रिय, वैश्य के कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण वा शूद्र के समान होने से ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाता है। अर्थात् चारों वर्णों में जिस–जिस वर्ण के सदृश जो–जो पुरुष वा स्त्री हो वह–वह उसी वर्ण में गिनी जावे।

धर्मचर्य्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।।१।।
अधर्मचर्य्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।।२।।

ये आपस्तम्ब के सूत्र हैं। धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण अपने से उत्तम–उत्तम वर्ण को प्राप्त होता है और वह उसी वर्ण में गिना जावे कि जिस–जिस के योग्य होवे।।१।।

वैसे अधर्माचरण से पूर्व अर्थात् उत्तम वर्णवाला मनुष्य अपने से नीचे–नीचे वाले वर्ण को प्राप्त होता है और उसी वर्ण में गिना जावे।।२।।

जैसे पुरुष जिस–जिस वर्ण के योग्य होता है वैसे ही स्त्रियों की भी व्यवस्था समझनी चाहिये। इससे क्या सिद्ध हुआ कि इस प्रकार होने से सब वर्ण अपने–अपने गुण, कर्म, स्वभावयुक्त होकर शुद्धता के साथ रहते हैं। अर्थात् ब्राह्मणकुल में कोई क्षत्रिय वैश्य और शूद्र के सदृश न रहे। और क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र वर्ण भी शुद्ध रहते हैं। अर्थात् वर्णसंकरता प्राप्त न होगी। इससे किसी वर्ण की निन्दा वा अयोग्यता भी न होगी।

क्रमशः अगले अंक में .....

धरोहर....

शास्त्रार्थ परम्परा के योद्धा.....

महात्मा अमर स्वामी जी महाराज

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
मो० : ६८३७४०२१६२

सिर पर शोभायमान केसरिया पगड़ी, हाथ में सुन्दर बेतलिए,काषायवस्त्र धारी ६० वर्ष की आयु में भी सिंह गर्जना करती हुई प्रभावशाली गम्भीर वाणी के धनी, चेहरे पर लावण्यता एवं स्नेहासिक्त वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, आँखों में चमक, मन में उत्साह एवं प्रसन्नता, अभावों में भी भाव पैदा करने वाले, शास्त्रार्थ परम्परा के अजेय योद्धा, पुराणों के मर्मज्ञ विद्वान् विद्वत्–शिरोमणि, सन्यासी मूर्धन्य, वेदप्रचार के लिए समर्पित व्यक्तित्व के धनी, को आर्य जगत् में कौन नहीं जानता? अर्थात् आबाल–वृद्ध के लिए पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी का नाम ही पर्याप्त है। सन्यास से पूर्व पुराने आर्य उन्हें ठाकुर अमर सिंह आर्य पथिक के नाम से जानते थे। उनकी वेशभूषा भी बड़ी सुन्दर एवं दर्शनीय शोभायुक्त निराली थी। वे निराले स्वरूप में मञ्च पर बैठकर जब प्रमाणों की झड़ी लगाते हुए अपने विषय की पुष्टी करते थे तों विपक्षी उनका मुख ताकते रहते थे और अन्त में पराजय स्वीकार कर लेते थे। आर्य समाज हापुड़ को आपने केन्द्र बनाया गुरूवार पूज्य श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती त्रिवेदतीर्थ भी आपका बड़ा सम्मान करते थे अतः हापुड़ में उपदेशक विद्यालय प्रारम्भ किया उसमें योग्य छात्रों का प्रवेश लिया और उन्हें भाषण देना–यज्ञ एवं संस्कार करना, शास्त्रार्थ करना सिखाया जाता था, वह समय भी कितना मनोरम तथा उद्देश्यपरिपूर्ण आर्य समाज के लिए समर्पित रहा श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी भी आकर भाषण देने की कला सिखाते थे स्वामी जी यज्ञ–वेदपाठ एवं संस्कार प्रशिक्षण देते थे।

आर्य समाज का वह स्वर्णिम अध्याय था जहाँ वेदप्रचारकों के लिए आर्य समाज सदैव खुला रहता था कार्यक्रम–योजना–विद्यार्थी गुरूजन आर्य समाज के अधिकारी सभी मिलकर भविष्य को संवारने के लिए, उत्साह पूर्वक प्रयत्नशील रहते थे। डॉ० अमरसिंह जी भी उत्सवों पर छात्रों के साथ ले जाते थे और वहाँ अभ्यास की परीक्षा लेकर सोने को कुन्दन बनाने के लिए पुनः तपस्या की भट्टी में तपाते थे। आजकल आर्यजगत् में सम्मानित प्रसिद्ध आर्य नेता विद्वान् ठा० विक्रम सिंह जी उसी समय के नवरत्न हैं जिन्हें स्वामी जी ने तराश कर तैयार किया था, स्वामी जी अपने भाषण में उद्घोषणा करते हुए कहते थे–

''है कोई अपनी माई का लाल जो विधर्मी हमसे शास्त्रार्थ कर सके'' –

कोई भी सामने नहीं आता था– आपकी घोषणायें आज भी वैसी ही सामाजिक हैं जो उस समय थीं आपने गीता, रामायण, महाभारत, कुरान, बाइविल पुराणों के मुख्य–मुख्य स्थलों को याद कर लिया था, आपने कई खोज करके चुनौतियां दी हैं विद्वानों के समक्ष रक्खे हुए प्रश्न आज भी अनुत्तरित हैं जैसे– १. कौन कहता है द्रोपदी के पाँच पति थे? आपने मात्र युधिष्ठिर जी को ही द्रोपदी का पति महाभारत के प्रमाणों से सिद्ध किया है। २. रावण का वध विजयादशमी को नहीं हुआ''। पूरा देश रावण दहन करता है पर प्रमाण कोई नहीं उत्तर किसी के पास नहीं बाल्मीकि रामायण से सिद्ध किया है कि चैत्र मास में रावण का वध श्रीराम जी ने किया था। ३. पितरों का श्राद्ध जिन्दा रहते करो–मरने पर कोई प्रमाण नहीं है। ४. ईश्वर कोई अवतार नहीं लेता ऐसा होने पर सर्वव्यापक गुण समाप्त हो जायेगा ऐसे ही बहुत सारे प्रमाण एवं अनुसन्धान हैं जो आज की भ्रमित जनता एवं भावी पीढ़ी के लिए अच्छा अवसर है। प्रेरणा लेकर लोग स्वाध्याय प्रारम्भ करेंगे। स्वामी जी की ऊहा शक्ति बड़ी विलक्षण थी एक दिन बैठे हुए सुना रहे थे कि एक बार शास्त्रार्थ में पादरी के साथ सामना हो गया पादरी ने पुराणों के श्रीकृष्ण पर आपत्ति कर दी वे गोपियों के साथ रास लीला करते थे ऐसे भगवान कैसे हो सकते हैं? उसका उत्तर न देकर बोले तुम्हारे यीशु की माँ मरियम को बेटा कैसे हुआ? कही कुँवारी लड़की को सन्तान सम्भव है? बस पादरी इस बात के उत्तर देने में ही ऐसा उलझा प्रश्न पर प्रश्न होते रहे और जहाँ से प्रारम्भ हुआ वह बात अधूरी ही रह गई और वह पादरी हारकर–शर्मिन्दा होकर चला गया।

एक दिन एक पण्डित जब शास्त्रार्थ में हारने लगा तो उसने स्वामी जी से पूछा कि आप आर्य समाजी हो सारंगी बजाते हो कभी पण्डित लिखते हो कभी ठाकुर लिखते हो आर्य समाज के यह नियम विरूद्ध है स्वामी जी प्रहसन में बोले ठाकुर तो इसलिए लिखता हूँ कि तुम ठाकुर की पूजा करते हो मैं तुम्हारा पूज्य बनूँ पण्डित इसलिए लिखता हूँ कि यह मेरा पुरुषार्थ है और महर्षि दयानन्द जी का प्रसाद है। सारंगी इसलिए बजाता हूँ कि तुम्हारे शिवजी डमरू बजाते थे, श्रीकृष्ण जी वीणा (बाँसुरी) बजाते थे ऐसे ही ऐसे समस्त कलाओं में पारंगत थे पूज्य स्वामी जी महराज।

स्वामी जी मुझे अत्यन्त स्नेह करते थे। मुझे उनकी सेवा करने का सौभाग्य बहुत कम मिला पर जितना भी मिला वह मेरे लिए धरोहर बन गया। आर्य समाज पिलाखुवा के उत्सव पर स्वामी जी भी थे मैं भी कुछ छात्रों को साथ लेकर गया था। जो व्यायम प्रदर्शन में सहयोगी रहते थे। समापन हो गया प्रातः काल चलने की तैयारी हो रही थी प्रातराश नहीं था क्योंकि जाने का समय हो गया था। आर्य समाज के उत्सवों पर एक अनुभव हुआ है कि प्रारम्भ होने से पूर्व फोन करेगें कहाँ तक आ गए? खाना भी और फलादि भी लाते हैं बैठकर खाते और खिलाते हैं समापन के पश्चात् अधिकारी ढूँढने से भी नहीं मिलते उपदेशक की मजबूरी जाये या न जाये किराये–दक्षिणा की प्रतीक्षा करते–करते कई बार रेलगाड़ी निकल जाती है। अस्तु– हम सब उसी प्रतीक्षा में बैठे थे पता नहीं किसी को श्रद्धा उमड़ आई वह भी अधूरी सी कि स्वामी जी बड़े विद्वान हैं इन्हें हलवा तथा चाय दे दो अन्य भी कुछ विद्वान थे पर हलवा कम था या उनकी व्यवस्था जैसी थी स्वामी जी ने आते ही खाना शुरू कर दिया कि सभी को मिलेगा समय भी भूख का था काफी देर बाद जब एक कटोरी हलवा मुझे मिला तो मैंने चम्मच से सभी छात्रों में विभाजित कर दिया और खिला दिया शेष नहीं बचा। स्वामी जी ने जब यह दृश्य देखा तो वे विह्ल हो उठे आँखों में आँसू भर लाये और बोले आचार्य जी! मैं आज हार गया और आप जीत गए। मैं समझ नहीं पाया मैंने कहा स्वामी जी आप सदैव जीतते और जिताते रहे आप कभी हार ही नही सकते तो बोले हार गया मैं स्वीकार करता हूँ– मैं चरणों में बैठकर उनके घुटने और पैर दबाते हुए बोला स्वामी जी क्या बात है? स्पष्ट इतना ध्यान रखते? हो कि स्वयं न खाकर पहले बच्चों को खिला दिया और स्वयं भूखे रह गए और इधर मैं बूढ़ा भूख में भूल ही गया कि मेरे भी बच्चें हैं और स्वयं खा गया बस यही आपकी जीत है और मेरी हार है। तब मैंने कहा गुरूजी ये तो आपने ही तो बताया है कि हम पहले आपको खिलावें तब खावें। आप इस बात को मन से निकाल देवें। उसके बाद स्वामी जी का स्नेह मेरे प्रति अधिक बढ़ गया था मुझे कहते थे कि आचार्य ने अपने स्वभाव से हमें जीत लिया। ऐसे गुरूवर का स्मरण करके भी प्रेरणा मिलती है। आर्य समाज का उद्भट् विद्वान का कितना सम्मानित व्यक्ति पौराणिक सम्राट माधवाचार्य जी को भी उनके आश्रम में आकर चरण छूकर आशीर्वाद लेते हुए देखा है। उन्होंने कहा अब भी आ जाओ स्वामी जी हमारे यहाँ खीर पूरी–हलवा, दक्षिणा की मौज ही मौज है। स्वामी जी ने हँसकर कहा कि तुम्हें ही मुबारक

शेष पृष्ठ – ४ पर

(एक चिन्तन- बाल उत्पीड़न जैसा अपराध)

बालकों के बस्ते का बढ़ता हुआ बोझ

– डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

आज कान्वेण्ट स्कूलों की भरमार हो रही है उनमें भी प्रवेश हेतु मोटी रकम ऐंठने का व्यवसाय फलता फूलता जा रहा है उधर बढ़ता हुआ बस्ते का बोझ! जितना भार बालक का उतना ही बस्ते का भार जैसे कि विद्यालय का बालक न हो स्टेशन पर रहने वाला कुली हो। आज छोटे नन्हें मुन्ने बालक का विद्यालय में पढ़ाना कठिन कार्य हो गया है।

पुस्तकें भी बड़ी अजीबोगरीब हैं अंग्रेजी की अनेक पुस्तकें वह भी मोटी और कई कई सौ रुपए की! वैसे ही हिन्दी को मिल जायेंगी परन्तु कान्वेण्ट व इंग्लिश मीडियम स्कूलों में तो हिन्दी का कुछ महत्त्व ही नहीं संस्कृत तो बहुत दूर की बात है उधर इंग्लिश माध्यम के विद्यालयों में अंग्रेजी के शब्दों की तोता रटन्त से भारतीय संस्कृति से दूर ले जाया जा रहा है। जी०के० अर्थात सामान्य ज्ञान की बड़ी व अनेक पुस्तकें इतिहास की कोई नहीं।

टिवंकल, टिवंकल, पेरी, मेरी, जान, जैक्सन, माइकल के शब्द तो रटवाए जाते हैं जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं होंगे तो यह सब अंग्रेजी परिवार के ही सदस्य होंगे तो यह सब अंग्रेजी परिवार के ही सदस्य होंगे जो लन्दन में यूरोप में रहते होंगे उन मासूमों को यह भी पता नहीं गुड़ कहाँ किस पेड़ पौधे से तैयार किया जाता है उन्हें एक ही शब्द रटवाया जाता है चाहे दादा हो ताऊ मामा चाचा या कोई अन्य हो 'अंकल' घर में हों या बाहर हों बाजार या रिश्तेदारी में चाहे कितना भी वृद्ध हो सबका अंकल और चाची ताई मामी मौसी चाहे कितनी भी बड़ी हों सब आन्टी और एक बात और चरण स्पर्श करना तो दूर की बात नमस्ते करने में उन्हें लज्जा आती है हैल्लो गुड मार्निंग गुड आफ्टर नून, गुड इविनिंग, गुड नाइट वह भी अलग–अलग समय पर अलग अलग तरह के अभिवादन। हैलो अंकल एक सामान्य शब्द जैसे कि सब्जियों में आलू! ऐसे ही अंकल सबके लिए एक ही शब्द अर्थात् रेल में, बस में या कहीं रिश्तेदारी में अंकल सभी के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है अर्थात् सब धान सत्ताइस सेर।

थोड़ी बहुत कसर जो बाकी रह गई वह घर में घुसते ही टाई हाथ में पकड़ हिलाते हुए पूरी कर दी हैलो डैड या हैलो मम्मी! हलांकि यह शब्द हिन्दी व संस्कृत के नहीं अंग्रेजी के ही है परन्तु डैड जो मृत हो गया हो (मुर्दा) से मेल खाता है ममी तो आज भी मिश्र में पायी जाती हैं जो लगभग चार पांच हजार वर्ष पुरानी पिरामिडों में शव के रूप में स्थित हैं अपनी मम्मी को व पिता को ऐसे शब्द! कहां तक उचित हैं भारतीय संस्कृति में माता–पिता का कितना सम्मान है वह बालक को ममतामयी गोद से नया जीवन देने वाले हैं जब बालक विद्यालय से आता है दोनों हाथ जोड़ अभिवादन करता नमस्ते बोलता या चरण स्पर्श करता है तो माता–पिता व बड़ों के गुरुजनों के हृदय में सहसा प्रेम उमड़ पड़ता व आगे हाथ आशीर्वाद के लिए बढ़ जाते है परन्तु परेशानी वाली बात यह है कि बस्ते का बढ़ता हुआ बोझ व कान्वेण्ट की पढ़ायी इसमें बाधक है वह बालक को झुकने नहीं देती क्योंकि पीठ पर लदा पन्द्रह किलो का तमाम बोझ झुकते ही पीठ से सरक कर बालक के सिर पर होता हुआ वृद्ध माता–पिता के चरणों पर गिर कर उनके पैरों को और चोट पहुँचा देगा क्योंकि उस बस्ते में बालक के लिए दूध पानी की बोतल ज्यामेट्री बाक्स लन्च बाक्स और दस बारह उत्तर पुस्तिकाएँ लगभग दस बारह ही पुस्तकें व अन्य छोटे सामान रखने अति आवश्यक हैं जैसे रेजर, रबर, ब्लेड, गम, कलर बाक्स, आदि जिन्हें स्कूल में भी चैक किया जाता है कहीं कोई आइटम कम तो नहीं रह गया। बालक झुकना नहीं सीखता जीवन भर सीधे अकड़ा ही रहता है।

हालांकि कम्प्यूटर का युग आ गया है अब तो विश्व की कोई भी सूचना संदेश इतिहास व घटना अभी लाइव (सीधा प्रसारण) हो एक मिनट पहले का हो या एक पल अथवा पाँच सौ वर्ष पूर्व का हो देखा जा सकता है इससे बस्तें का बोझ तो कम होगा परन्तु, हाथ है तो हैप्पी बर्थ–डे अंकल टिंकल से पीछा न टूटेगा न बालकों को पता चलेगा ताई, चाची, मामी, मामा, चाचा ताऊ व दादा कौन है न चरण छूकर आशीर्वाद ही मिलेगा न हमारे नन्ने मुन्ने समझ पाएंगे कि हिन्दी क्या है संस्कृत क्या है जिन भाषाओं में हमारे पूर्वज चक्रवर्ती सम्राट महान योद्धा ऋषि महर्षि वैज्ञानिकों के इतिहास हैं गौरव की गाथाएं हैं याज्ञवल्क्य, भर्त्तहरि, अश्वपति, सर्याति, देवव्रत, शकुन्तला, गार्गी, पाणिनी, सीता, राम कृष्ण, अर्जुन, बप्पा रावल, राणा सांगा प्रताप दाहिर कौन थे डॉ० जगदीश चन्द्र बसु, मामा, वराह मिहिर, लगध मुनि, पंतजलि कौन थे कैसे जान पाएँगे कौन बताएगा?

बड़े दुख की बात है कि स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् भी भारत के बच्चे अपने गौरव शाली इतिहास अपनी संस्कृति व संस्कारों से दूर हैं आज भी वही शिक्षा दी जा रही है, जिसने भारत को इंग्लिश्तान बनाने के लिए शिक्षा वह भी अंग्रेजी को बढ़ावा दिया था अर्थात् मैकाले ने। आज कम से कम हमें अपनी भारतीय संस्कृति व शिक्षा वह भी वैदिक शिक्षा की ओर ध्यान देना चाहिए था वह अभी नहीं हुआ। वह दिन कब आएगा। जब भारत में हिन्दी सांस्कृत व वैदिक शिक्षा का उदय होगा।

मो० : ६५५७५६३५४१
चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

पृष्ठ – ३ का शेष

महात्मा अमर स्वामी जी महाराज

हो, हम तो यूँ ही अच्छे हैं। ऐसे विद्वान सन्यासी के लिए ऐसा भी दिन आया जब सारा सामान सड़क और रेल पटरी के बीच की पटरी पर झोपड़ी डालकर समय गुजारना पड़ा जो समय सेवा–सुविधा में व्यतीत होता वह कष्टभरी आहों में गुजारा कई दिनों की सूखी रोटियाँ पानी में भिगो कर खाते हुए लोगों ने देखा तो पूछा स्वामी जी क्या भोजन की पेरशानी है? तो स्वाभिमान में बोले मेरे गुरू को तो सूखी रोटियाँ भी न मिली तो भूखे ही रहे थे कम से कम मुझे सूखी तो मिल गई है। ऐसे स्वाभिमानी महाराणा प्रताप के वंशज ने उनकी गरिमा को चार चाँद लगाये लेकिन किसी के भी सामने स्वाभिमान को कमजोर नहीं होने दिया। पूरा जीवन शास्त्रार्थ करने–प्रवचन करने, पुस्तके लिखने और स्वाध्याय करने में ही समर्पित कर दिया। अब कौन उन जैसा सुख–सुविधाओं में रहकर देवदयानन्द के प्रचार हेतु संकल्पित होगा? समय की पुकार है श्री लाजपत राय आर्य ने अन्तिम दिनों सेवा करके जो मेवा ली है वह उनके लिए संजीवनी का वरदान है। आज वे ही स्वामी जी की पहिचान है उनका प्रकाशन उनके नाम है पूरे देश में आज भी वे उसी के लिए चिन्तन करते है। महात्मा अमर स्वामी जी आर्य जगत् के यशस्वी विद्वान रहे हैं आपका जन्म स्थान खुर्जा–अलीगढ़ मार्ग पर अरनियाँ ग्राम हैं कुँवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर भी आपके ही परिवार में थे आपके ग्राम से १०–१५ विद्वान आर्य समाज के उपदेशक बनें और वेद प्रचार किया। ग्राम में आर्यसमाज मन्दिर है लोगों में उनके प्रति सम्मान है। प्रो० रतन सिंह जी गाजियाबाद में रहे वे आपके दामाद थे उनके बेटे सत्यकेतु आर्य एक अच्छे युवा वकील एवं कार्यकर्त्ता हैं। आपके तीन सुपुत्र हैं जिसमें धनञ्जय आर्य अच्छे कवि हैं यह परिचय इसलिए भावी पीढ़ी अपने पूर्वजों को भूल न जावें आप उनसे प्रेरणा ले सकें जिनके बलिदानों से आर्य समाज इस स्थिति में पहुँचा है हमें उनके ऋण को उतारने का संकल्प लेना है उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना है म० अमर स्वामी जी आर्यजगत् का चलता–फिरता वैदिक पुस्तकालय थे उन्हें प्रमाण साकार भी कहते थे उनकी स्मरण शक्ति बड़ी विलक्षण थी उनकी अमर कृति पुस्तकें "निर्णय के तट पर" छः भाग में है और भी पुस्तके हैं उनका पूर्ण परिचय उसी में प्राप्त होगा। मुझे उनके अन्तिम दर्शनों का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था बिना किसी सूचना के ऐसे ही आया जैसे उस आत्मा ने मुझे बुलाया हो शेष चर्चा कभी फिर करेंगे। मैं अपनी ओर से गुरूकुल परिवार की ओर से तथा आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

धर्म चिन्तन -

ऐसे धर्म को धिक्कार है, जो सत्यता में बाधक बने

– विवेक प्रिय आर्य, मथुरा, उ.प्र.

प्रत्येक प्राणी का यह स्वभाव होता है कि वह दुःख से बचना तथा सुख को पाना चाहता है। फिर मनुष्य तो सृष्टि का सबसे श्रेष्ठ प्राणी है, वह क्यों नहीं सुख की प्राप्ति के लिए पूर्ण पुरूषार्थ करेगा? आज संसार भर के प्रबुद्ध मनुष्य (चाहे वे किसी भी महत्वपूर्ण पद पर आसीन हो) संसार को सुखी बनाने का यत्न अपने–अपने ढंग से करते प्रतीत हो रहे हैं। परन्तु इसके उपरांत भी आज सम्पूर्ण मानव समाज अशांति, आतंक, हिंसा, घृणा, मिथ्या, छल, कपट, ईष्या, राग, द्वेष से ग्रस्त होकर अति दुःखी व अशांत है। विचार आता है कि क्या कारण है कि चिकित्सा करते रहने पर भी रोग बढ़ता जा रहा है? मेरा मानना है कि इस सब का मूल कारण सत्य और वास्तविकता से अनभिज्ञ रहना अथवा जानकर भी उसके अनुकूल व्यवहार न करना ही है। आज सारे संसार में विकास की होड लग रही है। हम छल से दूसरों को गिराकर उससे आगे जाना चाहते हैं। दूसरों की झोपड़ियाँ जलाकर अपने भव्य भवन बनाना चाहते हैं, दूसरों की थाली से सूखी रोटियां भी छीनकर स्वयं सुस्वाद सरस भोजन करना चाहते हैं, दूसरों के तन से जीर्ण शीर्ण वस्त्र भी छीनकर स्वयं बहुमूल्य वस्त्र पहनकर फैशन करना चाहते हैं तथा दूसरों का गला दबाकर स्वयं एकाकी अमर जीवन जीना चाहते हैं। क्या ऐसा जीवन हमारी सुख, शांति का विनाशक नहीं? क्या मानवीय हत्या का हनन करने वाला नहीं है? हमारा विकास तो तभी होगा जब हमारा जीवन सत्यता से परिपूर्ण होगा। क्योंकि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता। धर्म के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, देवी–देवताओं के नाम पर जितना रक्तचाप व वैमनस्यता संसार में हो रही है, संभवतः उतना किसी अन्य कारण से नहीं। धर्म के नाम पर यह पाप क्यों? धर्म और ईश्वर के नाम पर ईर्ष्या, राग, द्वेष, घृणा, हिंसा क्यों? हमें धर्म का ऐसा सच्चा स्वरूप संसार के सामने लाने का प्रयास करना होगा, जिसमें पाखण्ड, अंधविश्वास व असत्य का कोई स्थान न हो। यही विचार संसार के ऋषियों (ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त) का रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती तो परमाणु से लेकर परमेश्वर तक का यथार्थ ज्ञान व उससे अपना व दूसरों का उपकार करना ही विद्वानों का कर्तव्य बताते हैं। दुर्भाग्यवश महाभारत के समय से वेद के नाम पर, धर्म के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, देवी–देवताओं के नाम पर कुछ विकृतियों ने जन्म लिया और वेद केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित रह गया। उस वैदिक कर्मकाण्ड के नाम पर मांसाहार, व्यभिचार, पशुबलि, नरबलि, स्त्री व शूद्र वर्ग के प्रति हीन भावना, मदिरापान आदि कुरीतियां इस देश में फैल गईं। एक ईश्वर की जगह अनेक देवी–देवता प्रचलित होकर विश्व में हजारों मत–मतान्तर चल पड़े।

सर्वशक्तिमान और सर्वसामर्थ्य सम्पन्न ईश्वर शक्ति के अस्तित्व में रहते हुए भी इन देवी–देवताओं (वह भी एक दो नहीं, चार छः नहीं अपितु पूरे तैतीस करोड़) को प्रभाव में लाने की आवश्यकता क्यों हुई? इसका किसी के पास कोई तर्क संगत उत्तर नहीं है। जीवन में पूजा का किसी रूप में कोई भी उपयोग संभव नहीं है और पूजा से कुछ भी प्राप्त कर पाना संभव नहीं, व्यक्ति जो कुछ प्राप्त करना चाहता है या करता है वह केवल अपने पौरूष और पुरूषार्थ भरे प्रयासों से प्राप्त करता है। लेकिन सहज और सरलतम रूप में प्राप्त करने की मनुष्य की स्वाभाविक मनः प्रवृत्ति ने उसे पौरूष और पुरूषार्थ से दूर ढकेल दिया और पूजा से वह कुछ भी प्राप्त नहीं कर सका। इस कारण देश और समाज पतित होता चला गया। समस्याएं बढ़ती गईं, समाधान संभव नहीं हो सका। देश पराधीन हो गया, विदेशी आक्रमणकारी हमारी राजसत्ता को हथियाकर बैठ गये। अत्याचार हो रहे, समाज में हा हा कार हो रहा, समाज लुटता–पिटता रहा पर कोई बचाने वाला पैदा ही नहीं हुआ। जिन देवी–देवताओं पर हम विश्वास साधकर बैठे वह दीन–हीन स्थिति में मौन धारण कर देवालयों में बैठे कांप रहे थे। हमारी रक्षा करना तो दूर वह स्वयं अपनी रक्षा भी नहीं कर पा रहे थे। हम ढ़ोल, मजीरा, शंख, झांझर और चिमटा लेकर उन पत्थर के देवी–देवताओं के सामने गीत गाते कीर्तन करते रहे। मौत के भय से थर–थर कांपते कायर–कायर और क्लीवजन कंठीमाला हाथ में लेकर ग्रहों, नक्षत्रों एवं राशियों में अपना भाग्य लेख पढ़ने के लिए जन्मकुण्डली बिछाकर बैठे रहे। मंदिरों–देवालयों में जाकर देवी–देवताओं की मूर्तियों के सामन माथा रगड़ते रहे लेकिन उनके दिव्य चक्षु इहलोक के पैशाचिक दुराचारों को कभी नहीं देख सके। विदेशी आक्रांता इन मूर्तियों को तोड़कर चकनाचूर करते रहे। उन्हें खण्ड–खण्ड कर कुओं पोखरों में फैका गया, पर न तो ये देवी–देवता कुछ कर सके और न उनके पुजारी। बल्कि यह पुजारी तो बलात्कार पीडित महिला की तरह असहाय और विवश होकर आंसू बहाते रहे। यदि इन्होंने इसके विपरीत स्वयं पौरूष की भाषा पढ़ी होती, धर्म और ईश्वर के सच्चे निराकार स्वरूप को समझा होता तो कोई शक्ति इस देश की ओर आंख उठाकर नहीं देख पाती। सोमनाथ मंदिर की कहानी जब हमारे स्मृति पटल पर उभर का आती है तो आंखों में खून उतर आता है। हम केवल पौराणिक आख्याओं तक सीमित बने रहे। भूगोल से हम प्रारंभिक परिचय कभी प्राप्त नहीं कर सके। इसलिए धरती को कभी शेषनाग के फन पर टिका दिया, कभी कश्यप की पीठ पर और कभी गाय के सींग पर। क्योंकि सभी जीवधारियों की कालावधि निश्चित है, अतः झूठ को स्थाई रूप देने की दृष्टि से इन तीनों को त्रिकालजयी बना दिया और धरती का गैंद रूप देकर इधर से उधर उठाकर रखते रहे। झूठ में हमारी अगाध आस्था रही है कि हमें अपने पूर्वजों की कही बात का भी ध्यान नहीं रहता। आर्यभट्ट और वरामिहिर हमारे पूर्वज थे, जिन्होंने पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा की परिधि, उनका व्यास और उनकी आपस की दूरी की माप सटीक रूप में दी थी। लेकिन हमारे झूठ के क्षेत्र में वह कहीं बाधक न बन जाये इसलिए उसे जान–बूझकर दृष्टि ओझल कर दिया। हमारे यह पुजारी के व्यवसायी टिपकादास धरती पर फल कटहेरी की तरह ब्रह्म का बीज बोते रहे हैं, जिनके बेल रूप में फैलकर कहीं पैर टिकाने को स्थान नहीं छोड़ा है। हमारे यहाँ महाभारत के महानायक कर्मयोगी श्रीकृष्ण और गीता के रूप में उपलब्ध उनकी वैचारिक धरोहर युगों–युगों तक मनु पुत्रों का मार्गदर्शन कर सकती है। लेकिन इन टिपकादासों ने उसकी विषयवस्तु की सहज विश्वसनीयता पर तमाम तरह के प्रश्नवाचक चिन्ह खड़े कर दिय हैं। श्रीकृष्ण जैसे योगीराज, अदम्य व्यक्तित्व पर भी इन मिथ्यावाद के प्रणेता टिपकादासों ने अपनी अतृप्त यौन पिपासा को विभिन्न रूपों में उन पर निर्ममता से प्रत्यारोपित कर उन्हें रसिक बिहारी, छैल बिहारी, रास बिहारी, लीला बिहारी और बांके बिहारी जैसे तमाम तरह के नाम देकर उन्हें राधा के पैरों में महावर रचाने बैठा दिया।

आज धरती पर उपलब्ध सभी सुख सुविधाएं और उसके उपकरण स्वयं मानव ने पैदा किये हैं। किसी देवी देवता का उसमें इंच मात्र का योगदान नहीं है किंतु पाखण्डी–मिथ्यावादी अपने स्वार्थ हित में उसका विभिन्न रूपों में गुणगान करते चले आ रहे हैं। कालान्तर में धीरे–धीरे इस देवत्व भाव को समान भाव से पशु पक्षियों पर भी आरोपित कर दिया और अंत में यह देवता पत्थरों पर भी उकेरे जाने लगे। पराकाष्ठा की स्थिति तो यहां तक पहुंच गई कि ढ़ेले पर कलावा बांधकर उसे सीधे–सीधे गणेश भगवान बना दिया गया। इस देश में भिखारी से लेकर पुजारी तक मांगकर खाने वालों की फौज खड़ी होती चली गयी। ऋषि ने 'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' का जो उपदेश दिया उसके विपरीत बहुदेवतावाद का अंतहीन सिलसिला खड़ा हो गया, जो आज भी समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। पत्थरों, धातुओं और लकड़ियों के टुकड़ों पर तमाम तरह के देवी–देवताओं की विचित्र–विचित्र शक्लें उतारकर देवालयों, मंदिरों और घरों में खड़ी कर दी। यह देवी–देवता आज तक किसी को कुछ नहीं दे सके, बल्कि स्वयं इस कमाऊ समाज पर भार बन जाते हैं। हमारे ही पैदा किये हुए देवता, जो हमारी ही दी हुई व्यवस्था पर जीवित हैं, हमें उन्हीं के आगे मंगिता बनाकर बैठा दिया। वैसे सृष्टि नियम के विरूद्ध बातें सभी मतों में हैं, जैसे मुस्लिम भाई कहते हैं कि हमारे पैगम्बर मोहम्मद सहाब ने एक ही उंगली से चांद के दो टुकड़े कर दिय। इसी प्रकार हमारे पुराणों में सबसे अधिक चमत्कारिक बाते हैं, जैसे हनुमान ने अपने बचपन में ही सूर्य को गाल में रख लिया, कुंती कर्ण उत्पन्न हुआ, योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत अपनी उंगली पर उठा लिया, श्रीकृष्ण द्रोपदी का चीर बढ़ा दिया आदि। भूत–प्रेत, गण्डा, डोरी, श्राद्ध–तर्पण, फलित ज्योतिष, गृहों का नाराज होना या खुश होना तथा मूर्तिपूजा व अवतारवाद का मानना अंधविश्वास व पाखण्ड है। क्योंकि यह सब बातें प्रकृति नियम के विरूद्ध हैं। इसलिए इनको मानकर वैदिक धर्म में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए संध्या करना (जिसे ब्रह्मयज्ञ कहते हैं), दूषित वातावरण को शुद्ध करने के लिए हवन करना (जिसे देवयज्ञ करते हैं)। शरीर को स्वास्थ्य रखने के लिए यम–नियमों से समाधि तक पहुंचने के लिए अष्टांग योग करना, दूसरों की भलाई के लिए परोपकार करना, वेदों सहित सभी आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना और उनके अनुसार जीवन बनाना आदि मुख्य सिद्धांत वैदिक धर्म के हैं। इसलिए हम अपने जीवन को पवित्र स्वस्थ्य रखना चाहते हैं तो हमें अन्य मतों व पन्थों को छोड़कर वैदिक धर्म अपनाना चाहिए, जिससे हम अपने परिवार, सामज, राष्ट्र व केवल मानव मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने जीवन को सफलता की ऊंचाईयों को छूते हुए मोक्ष के अधिकारी बने। इससे उत्तम अन्य कोई मार्ग नहीं है।

मो० : ०९७१९९१०५५७

सामाजिक चिन्तन-

समाज में 'क्षमा' शब्द लुप्त क्यों हो रहा है?

–श्रीमती सुमन रानी

क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात,
का रहीम हरि को घट्यो जो भृगु मारी लात।

क्षमा के सम्बन्ध में हिन्दी जगत के प्रसिद्ध महाकवि रहीमदास ने अपना प्रसिद्ध दोहा लिखा है जो सम्पूर्ण समाज को यह प्रेरणा देता है कि इस जिन्दगी में जाने–अनजाने में गलतियां तो हर मनुष्य से होती ही रहती हैं। इसलिए हमारा कर्तव्य बनता है कि हम उसके द्वारा की गयी गलतियों को क्षमा कर दें इसी में हमारा बड़प्पन हैं कभी आपने सोचा है कि हम अपने दैनिक जीवन में कितने लोगों को 'क्षमा' कर पाते हैं और कितने लोगों से अपने कृत्यों के लिए 'क्षमा' मांगते हैं।

'क्षमा' शब्द के लिए अंग्रेजी में प्रायः Forgiveness, Pardon, Sorry, Excuse me, उर्दू में 'गुस्ताखी माफ जैसे शब्द प्रयोग किये जाते हैं। जिनका भाव यह होता है कि मुझसे जाने अनजाने में गलती हो गयी है, मुझे क्षमा कर दो। होता भी यही है कि जब किसी सभ्य,, समझदार व्यक्ति से अचानक कोई गलती हो जाती है तो वह एकदम 'क्षमा' सौरी, गुस्ताखी माफ, बोलकर अपने द्वारा की गयी गलती की क्षमा याचना करता है।

कभी आपने सोचा है कि जब हमसे किसी के प्रति कोई गलती हो जाती है तो हम चाहते हैं कि वह व्यक्ति हमें क्षमा कर दे। परन्तु जब हमारे प्रति किसी से कोई गलती हो जाती है तो हम यह चाहते है कि हम उसको दण्डित करें। ऐसा क्यों? क्या हममें इतनी क्षमता नहीं है कि हम उसको 'क्षमा' कर सकें।

कभी आपने कल्पना की है कि संसार में ऐसा कौन सा उपकार है जो अनमोल है और देने वाले के लिए बहुत ही आसान और सस्ता है, वह उपकार है किसी को उसके द्वारा अनजाने में की गयी किसी गलती के लिए उसको क्षमा कर देना। इस प्रक्रिया से जाने–अनजाने में गलती करने वाला तो अपनी गलती के लिए आत्मग्लानि तो अनुभव करता ही है परन्तु क्षमा करने वाला अपनी आत्मा में कहीं अधिक सुख का अनुभव करता है।

याद कीजिए, द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका ने जापान के दो शहरो पर परमाणु बम से हमला कर विश्व का सबसे घिनौना कृत्य किया था। इस घटना से परमाणु बम के आविष्कारक आइंसटीन ने सार्वजनिक रूप से सम्पूर्ण विश्व से क्षमा याचना करते हुए कहा था कि जीवनभर मुझको परमाणु बम बनाने का अफसोस रहेगा। मैं मानव जाति के प्रति क्षमा प्रार्थी हूँ।

भगवान राम भी वन जाते समय अपने नगरवासियों से हाथ जोड़कर क्षमा मांगते हुए कहते हैं –'हुआ जो अपराध मुझसे सो 'क्षमा' कर दीजिएयेगा। यहां पर 'क्षमा' का अर्थ अपने द्वारा की गयी गलतियों के प्रति पश्चाताप करना है। यीशु मसीह, महर्षि दयानन्द, छत्रपति शिवाजी, स्वामी विवेकानन्द, गांधीजी आदि को जीवन में अनेक बार हिंसा का सामना करना पड़ा परन्तु उन्होंने हिंसा करने वालों को सदैव क्षमा करने का निर्णय लेने में जरा भी देर नहीं की। क्षमा मानव जीवन में संजीवनी के समान अमृत वचन है तथा परोपकारी है।

क्षमा की सबसे बड़ी विशेषता है कि यह शान्ति और सुख की जननी है और मनुष्य को अहंकार से मुक्त करती है जो मनुष्य के लिए एक सबसे कठिन कार्य है। इसके साथ ही साथ यह मनुष्य को सहनशील बनाती है। क्षमा हमें हमारे अन्दर से ही विकसित होती है। इसको कोई पैदा नहीं करता है। यह ईश्वर की महान कृपा है, महान अनुभूति है। क्षमा के विषय में अपने भावों को व्यक्त करते हुए किसी ने क्षमा को बल, सम्बल, प्रबल, ज्ञान, दान, समाधान, मान, सम्मान, वरदान, शिक्षा, दीक्षा, कीर्ति, नीति, परिणीत, कर्म, धर्म, सत्कर्म, सदाचार, धीरता, वीरता, गम्भीरता तथा सहिष्णुता आदि अलंकारों, से विभूषित किया है।

प्रायः मार्ग में आपने जाने–अनजाने में किसी व्यक्ति का कोई नुकसान हो गया और केवल एक शब्द सौरी बोल कर आगे बढ़ गये। क्या आपने कभी उससे पूछा है कि तुम्हारा कितना नुकसान हुआ है। इसी प्रकार कभी कोई व्यक्ति आपका नुकसान करके चला जाये और अपने किए हुए कृत्य के लिए क्षमा याचना न करे बल्कि उससे शिकायत करने पर वह आपको ही दोषी ठहराये तो आपको कैसा अनुभव होगा। उस व्यक्ति ने अपने किये हुए कृत्य के लिए क्षमा इसलिए नहीं मांगी क्योंकि उसे अपने धन, बल, पद, मान–सम्मान पर अहंकार है। अहंकार ही संसार में दुख का सबसे बड़ा कारण है।

जैन धर्म में क्षमा और अहिंसा को बहुत महत्व दिया गया है और अहिंसा को 'परमोधर्म' बताया गया है। हिंसा से तात्यपर्य केवल शारीरिक रूप से कष्ट पहुँचाना ही नहीं है अपितु यदि किसी को मानसिक या आर्थिक रूप से अथवा किसी अन्य प्रकार से भी पीड़ा या कष्ट पहुंचाया जा रहा है तो वह भी हिंसा ही कहलायी जायेगी। जैन मुनि अंहिसा के प्रति विशेष संवेदनशील रहे हैं। उनका मानना है कि जिस प्रकार से मनुष्य अपने प्राणों की रक्षा के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के प्रयत्न करता है उसी प्रकार से प्रत्येक पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि प्राणी भी अपने जीवन की रक्षा के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयत्न करते हैं। कहीं उनसे किसी कीट पतंग की भी हिंसा न हो जाये इसके लिए वह अपने पैरों में रूई से बने हुए पाद पहन कर चलते हैं। प्रत्येक मानव का यही धर्म एवं कर्तव्य है कि वह प्रत्येक प्राणी के लिए संवेदनशील हो।

क्षमा के विषय में यह भी कहा जाता है कि द्रौपदी ने यदि अपने अपमान के लिए दुर्योधन को क्षमा कर दिया होता तो शायद इतना बड़ा महाभारत नहीं होता और इतना बड़ा नरसंहार नहीं होता और इसी प्रकार यदि रावण ने अपने कृत्यों पर राम से क्षमा याचना कर ली होती तो रावण के सम्पूर्ण वंश का नरसंहार न होता और उसकी सोने की लंका आज भी विश्व का एक अद्भुत चमत्कार होती।

सबसे बड़े दुःख की बात तो यह है कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर अहंकार का प्रभाव तेजी से व्याप्त हो रहा है। जिस कारण मानव अब 'क्षमा' जैसे शब्द प्रयोग करना अपनी तौहीन समझता है। समाज में असहिष्णुता तेजी से बढ़ रही है और सहिष्णुता विलुप्त हो रही है। तो आईये, 'क्षमा' शब्द को अपने जीवन का अंग बनायें और स्वयं भी सुख से जियें और दूसरों को भी सुख से जीवन का अवसर प्रदान करें। यही महापुरूषों के जीवन का मूल लक्ष्य है।

क्षमा बल है, क्षमा सम्बल है, क्षमा ही प्रबल है, क्षमा ज्ञान है। क्षमा दान है, क्षमा ही समाधान है, क्षमा मान है, क्षमा सम्मान है। क्षमा वरदान है, क्षमा शिक्षा है, क्षमा दीक्षा है, क्षमा रीति है। क्षमा नीति है, क्षमा परिणिति है, क्षमा कर्म है, क्षम धर्म है। क्षमा सत्कर्म है, क्षमा सदाचार है, क्षमा धीरता है, क्षमा वीरता है। क्षमा गम्भीरता है, क्षमा सहिष्णुता है।

प्रेरक प्रसंग-

संन्यासी की क्षमा याचना

स्वामी विवेकानन्द नए–नए संन्यासी बने थे। उस समय तक उन्होंने प्राणिमात्र में समान भाव से ईश्वर के दर्शन के संदेश का गंभीरता से अध्ययन नहीं किया था। स्वामी जी युवावस्था में काफी समय तक ग्रामीण अंचलों का भ्रमण करने में लगे रहे। वे गाँवों से दूर रहने का उपदेश दिया करते थे।

एक दिन भीषण गरमी में स्वामीजी एक गाँव से गुजर रहे थे। प्यास लगी, तो खेत की मेड़ पर बैठे एक व्यक्ति को लोटे से पानी पीते देखकर कहा, "भैया, मुझे भी थोड़ा सा पानी पिला दो।"

उस ग्रामीण ने भगवा वस्त्रधारी को देखकर सिर झुकाया तथा बोला, 'महाराज मैं निम्न जाति का व्यक्ति आपको, अपने हाथ से पानी पिलाकर पाप मोल नहीं ले सकता।'

स्वामी जी सुनकर आगे बढ़ लिए। एक ही क्षण में उन्हें लगा कि मैंने साधु बनने के लिए जाति, परिवार तथा पुरानी प्रचलित गलत मान्यताओं का त्याग कर दिया, फिर आग्रह करके उस निश्छल ग्रामीण का पानी क्यों नहीं स्वीकार किया। मेरा सोया जाति अभिमान क्यों जाग उठा? यह तो अधर्म हो गया। वे तुरंत किसान के पास लौटकर बोले, भैया, मुझे क्षमा करना। मैंने तुम जैसे निश्छल परिश्रमी व्यक्ति के हाथों से पानी न पीकर घोर पाप किया है। निम्न जाति तो उसकी ही होती है, जो दुर्व्यसनी और अपराधी होता है। स्वामी जी ने उसके हाथ से लोटा लेकर पानी ग्रहण किया। बाद में वे खुलकर ऊँच–नीच की भावना पर प्रहार करते रहे।

–गुरूकुल पूठ–हापुड़

20 वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव 4 से 6 नवम्बर 2017 नवलखा महल उदयपुर में मनाया जायेगा। आप अवश्यमेंव पधारें।

— अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष— न्यास उदयपुर

आर्य समाज निर्वाचन

1. आर्य समाज चाँदपुर- बिजनौर, प्रधान— श्री उमेश चन्द्र गोयल, मन्त्री— श्री अतुल कुमार भाटिया, कोषाध्यक्ष— प्रेमकुमार आर्य।

2. आर्य समाज गढ़ी होशदार पुर हापुड- प्रधान— श्री रामपाल सिंह आर्य, मन्त्री— श्री मा० पवन सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष— श्री आदेश पाल सिंह आर्य।

3. आर्य समाज बछलौता, बाबूगढ़, हापुड़- प्रधान— श्री निरञ्जन सिंह आर्य शास्त्री, मन्त्री— श्री सुरेन्द्र सिंह एडवोकेट, कोषाध्यक्ष— श्री मा० सुखवीर सिंह आर्य।

4. आर्य समाज उपैड़ा, बाबूगढ़, हापुड- प्रधान—श्री मा० लोकेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री— श्री वीरेन्द्र कुमार शास्त्री, कोषाध्यक्ष— बिजेन्द्र सिंह आर्य।

5. आर्य समाज रसूलपुर-कुचेसर रोड़, हापुड़- प्रधान— श्री कर्मवीर सिंह आर्य, मन्त्री— विक्रान्त सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष— नरेन्द्र सिंह आर्य।

वेद प्रचार सप्ताह

७ अगस्त से १५ अगस्त तक आर्य समाज सिरसा इलाहाबाद में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन हुआ प्रतिदिन यज्ञ एवं प्रवचन होते रहे यजमानों ने यज्ञ किया जनता पर भारी प्रभाव पड़ा। प्रधान ने सारी व्यवस्था एवं संयोजन किया। —शिव प्रसाद सिंह आर्य

पृष्ठ — १ का शेष

गुरूकुल शिक्षा मानव निर्माण की .....

शिष्य स्वीकार किया जायेगा। स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी जैसे सन्यासी जो महर्षि दयानन्द सरस्वती की परम्परा में अपने जीवन को सदा निःस्वार्थभाव से समर्पित करके गुरूकुल पूठ का संचालन कर रहे हैं यह सबके लिए गौरव की बात है।

हमें इनका हर प्रकार का सहयोग करना चाहिये ये गुरूकुल समाज के सहयोग से चलते हैं इन्हें कहीं किसी वस्तु का अभाव होता है उसे पूरा करने का हमारा दायित्व है। आप सभी आज यह संकल्प लें कि हमारा योगदान इस संस्था के विकास में सहयोग के रूप में रहेगा। बच्चों को भोजन—वस्त्र—भवन अन्य किसी साधन का अभाव न रहे मेरा प्रयास संस्कृति मंत्रालय विभाग से जितना भी सम्भव है अधिक से अधिक सहयोग कर सौभाग्य का अनुभव करूंगा। हमारे विधायक मलिक जी भी इस दिशा में पूरा सहयोग करेगें तथा समाज से भी करायेंगे। विधायक श्री कमल सिंह मलिक जी ने भी माननीय मन्त्री जी के निर्देशानुसार संस्था के विकास का संकल्प लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से सभा प्रधान श्री डा० धीरज सिंह जी के स्थान पर उप प्रधान श्री ज्ञानेन्द्र जी गांधी ने भी अपने उद्‌बोधन में गुरूकुल सहयोग हेतु प्रेरणा प्रदान करते हुए सभी आर्यों से वेदप्रचार के लिए गुरूकुलों का भविष्य संवारने की प्रतिज्ञा कराई गुरूकुल प्रबन्ध समिति की ओर से संस्था उप प्रधान श्री शोदान सिंह आर्य ने मा० मंत्री जी का आभार व्यक्त किया तथा उनके साथ पधारे वि० अतिथि श्री जगत सिंह जी पूर्व विधायक का भी सम्मान कर धन्यवाद दिया पूर्व विधायक श्री कनक सिंह जी का भी आशीर्वाद प्राप्त हुआ सभा में आर०पी०सिंह० जी जिला गो० बु० नगर के अध्यक्ष वीरेश भाटी अमरोहा के अध्यक्ष ओमपाल सिंह आर्य तथा नगर के नत्थू सिंह आर्य राजनाथ सिंह आर्य सहित गा० बाद, के अध्यक्ष ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, हापुड़ जिले के उपाध्यक्ष महेश आर्य के साथ मन्त्री अशोक आर्य सहित पूरी टीम मुरादाबाद के जिलाध्यक्ष श्री अभय सोती सहित सभी अधिकारी वहां उपस्थित रहे मयंक आर्य, नरेन्द्र आर्य स्याना, राजेन्द्र सिंह गढ़ तथा मुलायम सिंह आर्य खैय्या सूबेदार, रिसाल सिंह लहाड़ा, राकेश कुमार एडवोकेट, नोएडा, ऋषि डेरी स्याना थी ऋषि पाल चौधरी, शोदान सिंह आर्य आदि का मन्त्री जी ने सम्मान किया। मन्त्री जी को भी स्मृति चिन्ह एवं शाल भेंट कर सम्मानित किया गया। श्री अंकुर सिरोही, प्रिं० महावीर सिंह मा० श्री रामनाथ सिंह, जितेन्द्र सिंह आदि की उपस्थिति में राजीव प्राचार्य ने "सत्यार्थ प्रकाश" अमर गन्थ मा० अतिथियों को भेंट कर सम्मानित किया मातृ वर्ग में श्रीमती सुदेश आर्या उप प्रधाना स्याना एवं अमिता आर्या अमरोहा का सम्मान रीना आर्या, प्रभा आर्य आदि—आदि ने किया। गुरूकुल के ब्र० दयानन्द आर्य ने धनुर्विद्या से बाण चलाकर माला पहनाई एवं कई चमत्कारी शब्द भेदी जैसे अभ्यास दिखाकर लोगों को पुराने युग की याद ताजी करके इतिहास दोहराया।

स्वामी अखिलानन्द जी के निर्देशन में ब्र० ऋषभ, ब्र० चेतन्य, ब्र० हिमाशुं, ब्र० शिवम् ने वेदपाठ किया आ० कुलदीप जी आ० दिनेश जी ने व्यवस्था में अध्यवर्यु का दायित्व निभाया संयोजन सभा मन्त्री एवं गुरूकुल संचालक स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने किया ने किया तथा अन्त में सभी आगन्तुकों उपदेशकों, यजमानों, सहयोगी सदस्यों का धन्यवाद करते हुए सदैव संस्था से जुड़े रहने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम के पश्चात् सभी ने ऋषि भोज का प्रसाद ग्रहण किया।

शोक समचार

1. आर्य समाज दतियाना के स्तम्भ उपप्रधान श्री विजयकुमार एडवोकेट सुपुत्र श्री अतर सिंह जी का १६ अगस्त को निधन हो गया। वे लगभग ५० वर्ष के युवा कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। पुनीत कुमार शास्त्री ने शान्ति यज्ञ सम्पन्न कराया सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने भी, शोक संवेदना व्यक्त की है।

2. आर्य समाज के वयोवृद्ध उपदेशक स्व० श्री सत्यदेव जी स्नातक मेरठ की धर्म पत्नी श्रीमती माता मानकौर जी का देहान्त अचानक मेरठ में हो गया। वे ८५ वर्ष की थी उनका शान्ति यज्ञ डॉ० वेदपाल आचार्य एवं रणधीर शास्त्री मेरठ ने किया। वीरेन्द्र आर्य, प्रकाशवीर आर्य दोनों पुत्र एवं श्रीमती सुधा शास्त्री, श्रीमती सुमन आर्या दोनों पुत्रियाँ वैदिक परम्परा से यज्ञ करते हैं। इस परिवार को वह गौरव प्राप्त है जिनके परदादा जी ने मेरठ आने पर महर्षि दयानन्द जी के दर्शन एवं प्रवचन सुनकर आर्य बने थे। सभा मन्त्री ने परिवार में जाकर शोक संवेदना व्यक्त की है। आर्य समाज जागृति विहार के सभी सदस्य एवं अधिकारी यज्ञ में में उपस्थित रहे।

3. आर्य समाज गढ़ी- होशदारपुर जि० हापुड़ के मन्त्री मा० पवन कुमार आर्य की माता जी श्रीमती शान्तिदेवी जी का देहान्त १६ अगस्त को हो गया। वे ८० वर्ष की थीं। उनका शान्ति यज्ञ श्री शिवकुमार शास्त्री सहित ग्राम के आर्य एवं आस—पास के सभी आर्य सम्मिलित हुए। सभामन्त्री धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने परिवार में जाकर शोक संवेदना व्यक्त की। मा० पवन जी जिला प्रतिनिधि सभा में आर्यवीर दल के अधिष्ठाता है। आर्य मित्र परिवार की ओर से शोक संवेदन।

— रणधीर कुमार शास्त्री, मेरठ

आर्य समाज गुलावटी

१. बुलन्द शहर में वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्री रमेश चन्द्र जैन जी रहे। वैदिक प्रवचन एवं भजन श्री भानु प्रकाश आर्य भजनोपदेशक द्वारा हुए कार्यक्रमों में श्री संजीव गोयल, सुनील आर्य, अशोक कंसल, अनिल आर्य, राजीव तेवतिया नरेन्द्र कुमार, बीनाकंसल, वन्दना कटारिया आदि रहे संयोजन — दीप्ति सिंह प्रधानाचार्य ने किया।

आवश्यक सूचना

जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने जिले की समस्त समाजों का विवरण तैयार करके जिसमें समाज नाम— स्थापना तिथि— सम्बद्धता तिथि, अधिकारियों के नाम व फोन नम्बर, सदस्यों की कुल संख्या भी अंकित हो चार्ट बनाकर कार्यालय में जमा करावें उसकी पत्रावली बना लेवें। आपके लिए भी वार्षिक विवरण एवं निर्वाचन में सुविधा रहेगी। पूरे प्रदेश की समाजों को कम्प्यूटर में अंकित करना है आपके सहयोग की आवश्यकता है।

—धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

गुरूकुल (पुष्पावती) पूठ, हापुड़ में सामवेद पारायण तथा कुछ आर्यसमाजों की ...ी झलकियां

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी के सानिध्य में सामवेद पारायण सम्पन्न तथा संस्कृति मंत्री लक्ष्मी नारायण जी के साथ गुरूकुल के आचार्य तथा अधिकारी गण सम्मान करते हुए

रीना आर्या जी द्वारा सम्मान

आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान ज्ञानेन्द्र गांधी जी द्वारा सम्मान

स्वामी जी द्वारा महेश आर्य, अशोक आर्य तथा मंत्री लक्ष्मी नारायण जी को आशीर्वाद देते हुए

गुरूकुल पूठ में सामवेद पारायण यज्ञ में भाग लेते आर्यजन

आर्य समाज गंगोह में वेद प्रचार सम्पन्न

आर्य समाज गुढ़ाखास, जालौन में वेद प्रचार सम्पन्न

आर्य समाज बलरामपुर बहराइच में वेद प्रचार सम्पन्न

आर्य समाज बलराम पुर बहराइच में भजन गाते भजनोपदेशक

आचार्या पवित्रा जी द्वारा गुरूकुल शासनी हाथरस में वेद प्रचार सम्पन्न

गुरूकुल शासनी हाथरस, कन्या विद्यालय की ब्रह्मचारिणियाँ द्वारा वेद प्रचार समारोह पर योगासन करते हुए

आर्य समाज गुलावटी, बुलन्द शहर में वेद प्रचार सम्पन्न

आर्य समाज सूर्यनगर, बड़ौत में वेद प्रचार सम्पन्न

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।